आधुनिक महिलाएँ परिवर्तन के दौर में

*डॉ. मुकेश चन्द शर्मा

नारी ईश्वर का वरदान है, समाज निर्माण में उसका अमूल्य योगदान रहा है। नारी को आरम्भ से ही सृजन, सम्मान और शक्ति का प्रतीक माना गया है। स्त्रियों को समाज का आईना कहा जाता है। यदि किसी समाज की स्थिति को देखना हो तो वहाँ की नारी की अवस्था को देखना होगा। राष्ट्र की प्रतिष्ठा, गरिमा उसकी समृद्धि पर उस राष्ट्र की स्त्रियों की दशा का व्यापक प्रभाव पड़ता है। स्त्री जो कि एक माँ है, निर्मात्री है। माँ अपने व्यवहार से बिना बोले ही बच्चे को बहुत कुछ सिखा देती है। स्त्री मार्गदर्शक है, वह जैसा चित्र अपने परिवार के सामने रखती है, परिवार व बच्चे उसी प्रकार के बन जाते है। स्त्री एक प्रेरक शक्ति है, वह समाज और परिवार के लिए चैतन्य स्वरूप है।

भारतीय संस्कृति में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वह शिव भी है और शक्ति भी, तभी तो भारतीय संस्कृति में सनातन काल से अर्धनारीश्वर की कल्पना सटीक बैठती है। एतिहासिक दृष्टि से भारतीय समाज में मातृ शक्ति के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। भारतीय वेद एवं ग्रन्थ नारी शक्ति के योगदान से भरे पड़े है। विश्वरा, अपाला, लोपामुद्रा तथा घोषा जैसी विदुषियों ने ऋग्वेद के अनेक सूक्तों की रचना करके और मैत्रेयी, गार्गी, अदिति इत्यादि विदूषियों ने अपने ज्ञान से तत्कालीन ज्ञानी पुरूषों को पीछे छोड़ दिया। शास्त्रों से लेकर साहित्य तक महिलाओं की महत्ता को स्वीकार किया गया है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" सिंधु संस्कृति में भी मातृदेवी की पूजा का प्रचलन परिलक्षित होता है। नारी का कार्यक्षेत्र न केवल घर बल्कि सम्पूर्ण संसार है। प्रकृति ने वंश वृद्धि की जो जिम्मेदारी नारी को दे रखी है वह न केवल एक दायित्व है अपितु एक चमत्कार और अलौकिक सुख भी है। इन सबके बीच नारी प्रारम्भ से ही अपनी भूमिकाओं के प्रति सचेत रही है।

भारतीय समाज में नारी की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहे है। इनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार–चढ़ाव आते रहे हैं। वैदिक युग में नारी की स्थिति सुदृढ़ थी। शिक्षा, धर्म, व्यक्तित्व और सामाजिक विकास में उसका योगदान था। संस्थानिक रूप से स्त्रियों की अवनति उत्तर वैदिक काल में शुरू हुई। उसके ऊपर अनेक प्रकार की निर्योग्यताओं का आरोपण किया गया। उनके लिए निन्दनीय शब्दों का प्रयोग होने लगा। मध्यकाल में इनकी स्थिति और दयनीय हो गई। पर्दा प्रथा इस सीमा तक बढ़ गई कि स्त्रियों के लिए कठोर एकान्त नियम बना दिए गये। शिक्षण की सुविधा पूर्ण रूपेण समाप्त हो गई।

महिलाओं के पुनरोत्थान का काल ब्रिटिश काल से शुरू होता है ब्रिटिश शासन की अवधि में भारतीय समाज की सामाजिक व आर्थिक संरचनाओं में अनेक परिवर्तन हुए। ब्रिटिश शासन के 200 वर्षों की अवधी में स्त्रियों के जीवन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अनेक सुधार आये। आजादी के दौर में महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया। एक तरफ इन्होंने स्त्री–चेतना को प्रज्ज्वलित किया वहीं आजादी के आन्दोलन में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ी। कईयों ने तो अपनी जान भी गँवा दी, फिर भी महिलाओं के हौसले कम नहीं हुए। रानी चेनन्मा, रानी लक्ष्मी बाई, झलकारी बाई, बेगम हजरत महल, अदा देवी जैसी तमाम वीरांगनाओं का उदाहरण हमारे सामने है। राष्ट्रीय आन्दोलन जैसे–जैसे गति पकड़ता गया महिलाओं की भागीदारी इसमें बढ़ती चली गई। इस क्रम में सारोजनी नायडू, सावित्री बाई फूले, स्वामी श्रदानन्द की पुत्री वेद कुमारी और अज्ञावती, नेली सेन गुप्ता, नागारानी गुददाल्यू, प्रीतिलता वाडेयर, कल्पनादत्त शान्ति घोष, सुनिति चौधरी, बीना दास, सुहासिनी अली, रेणुसेन, दुर्गा देवी बोहरा, सुशीला दीदी, अरूणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, ऊषा मेहता, कस्तूरबा गाँधी, डॉ. सुशील नैयर, विजय लक्ष्मी पण्डित, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, राजकुमारी अमृत कोर, इन्दिरा गाँधी, एनी बीसेन्ट, मैडम भीकाजी कामा, मार्ग्रेट नोबल (भगिनी निवेदिता) मैकेलिन, मीरा बहन इत्यादि महिलाओं ने न सिर्फ आजादी बल्कि समानान्तर रूप में नारी के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सरकार द्वारा महिलाओं की आर्थिक सामाजिक शैक्षणिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा में समाहित करने हेतु अनके कल्याणकारी योजनाओं और विकासात्मक कार्यों का संचालन किया। महिलाओं को विकास की अखिल धारा में प्रवाहित करने कि समुचित अवसर उपलब्ध कराकर

उन्हें अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति सजग करते हुए उनकी सोच में मूलभूत परिवर्तन लाने आर्थिक गतिविधियों में उनकी अभिरूचि उत्पन्न कर उन्हें आर्थिक–सामाजिक दृष्टि से आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बन की ओर अग्रसर करने जैसे अहम उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पिछले कुछ दशकों में विशेष प्रयास किये गये।

वक्त के साथ नारी का स्वभाव और चरित्र भी बदला है एवं अपने अधिकारों के प्रति वह बखूबी जागरूक हुई है। राजनीति, प्रशासन, समाज, उद्योग, व्यवसाय, विज्ञान–प्रौद्योगिकी, फिल्म, संगीत, साहित्य, मीडिया, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, वकालत, कला–संस्कृति, शिक्षा, आई.टी., खेल–कूद, सैन्य से लेकर अंतरिक्ष तक नारी ने छलांग लगाई है। नारी की नाजुक शारीरिक संरचना के कारण यह माना जाता रहा है कि वे सुरक्षा जैसे कार्यों का निर्वहन नहीं कर सकती। पर बदलते वक्त के साथ यह मिथक टूटा है। महिलाएं आज पुलिस, सेना और अर्द्धसैनिक बलों में बेहतरीन तैनाती पा रही हैं। यही नहीं श्मशान में जाकर आग देने से लेकर महिलाएं वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पुरोहिती का कार्य करती है और विवाह के साथ–साथ शांति यज्ञ, गृह प्रवेश, मुंडन, नामकरण और यज्ञोपवीत भी करा रही है। वस्तुतः समाज की यह पारंपरिक सोच कि महिलाओं के जीवन का अधिकांश हिस्सा घर–परिवार के मध्य व्यतीत हो जाता है और बाहरी जीवन से संतुलन बनाने में उन्हें समस्या आएगी, बेहद दकियानूसी लगती है। रूढ़ियों को धता बताकर महिलाएं जमीं से लेकर अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में नित नई नजीर स्थापित कर रही हैं। कल्पना चावला व सुनीता विलियम्स ने तो अंतरिक्ष तक की सैर की, साहित्य व लेखन के क्षेत्र में सरोजनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चोहान, अमृता प्रीतम, आशापूर्णा देवी, मनु भण्डारी, मैत्रयी पुष्पा, प्रभा खेगन, मृणाल पाण्डेय, अरूंधती राय आदि ने नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। पंचायतों में मिले आरक्षण का उपयोग करते हुए नारी जहाँ नए आयाम रच रही हैं, वहीं विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। आज देश की राष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष, विपक्ष की नेता, सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका में भारत की राजदूत से लेकर राज्यों की मुख्यमंत्री रूप में महिला पदासीन हैं तो यह नारी सशक्तीकरण का ही उदाहरण है। महिलाओं को सम्पत्ति में बेटे के बराबर हक देने हेतु हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम में संशोधन, घरेलू महिला हिंसा अधिनियम, सार्वजनिक जगहों पर यौन उत्पीड़न के विरूद्ध नियम एवं लैंगिक भेदभाव के विरूद्ध उठती आवाज नारी को मुखर कर रही है। दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, शराबखोरी, लिंग विभेद जैसी तमाम बुराईयों के विरूद्ध नारी आगे आ रही है और दहेज लोभियों को बैरंग लौटाने और शराब के ठेकों को बंद कराने जैसी कदमों को प्रोत्साहित कर रही है। ये सभी घटनाएं अधिकारों से वंचित नारी की उद्विग्नता को प्रतिबिंबित कर रही हैं। आज वह स्वयं को सामाजिक पटल पर दृढ़ता से स्थापित करने को व्याकुल है। शर्मायी–सकुचायी सी खड़ी महिला अब रूढ़िवादिता के बंधनों को तोड़कर अपने अस्तित्व का आभास कराना चाहती है। वर्तमान समय में नारी अपनी सम्पूर्णता को पाने की राह पर निरंतर बढ़ रही है, ताकि समाज के नारी विषयक अधूरे ज्ञान को अपने आत्मविश्वास की लौ से प्रकाशित कर सके।

20वीं सदी के उत्तरार्द्ध और अब 21वीं सदी के प्रारम्भ में बराबरी वाले जोड़े बनने लगे है। नौरी वाली नारी के साथ पुरूष की मानसिकता में बदलाव आया है। पहले नौकरी वाली औरत पति को "औरत की कमाई खाने वाला" कह कर चिढ़ाया जाता था। आज यह सोच बदल चुकी है। स्त्री स्वायतता में अर्थशास्त्र का योगदान अद्भूत है। स्त्रियां धन कमाने लगीं है तो पुरूष की मानसिकता में भी परिवर्तन आया है। आर्थिक दृष्टि से नारी अर्थचक्र के केन्द्र की ओर बढ़ रही है। विज्ञापन की दुनिया में नारियाँ बहुत आगे हैं। बहुत कम ही ऐसे विज्ञापन होंगे जिनमें नारी न हो लेकिन विज्ञापन में अश्लीलता चिन्तन का विषय है। इससे समाज में विकृतियाँ भी बढ़ रही हैं। अर्थशास्त्र ने समाजशास्त्र को बौना बना दिया है।

आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढ़ा रही है। आज की नारी कर्त्तव्यों को गृहकार्यों की इतिश्री ही नहीं समझती है, अपितु अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग है। वह स्वयं के प्रति सचेत होते अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाने का माद्दा रखती है। कोई सिर्फ यह कहकर उनके आत्मविश्वास को तनिक भी नहीं हिला सकता कि वह एक 'नारी' है। शिक्षा के चलते नारी जागरूक हुई और इस जागरूकता ने नारी के कार्यक्षेत्र की सीमा को घर की चहरदीवारी से बाहर की दुनिया तक फैला दिया। शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के चलते आज नारी भी अपने कैरियर के प्रति संजीदा है। इससे जहाँ नारी अपने पैरों पर खड़ी हो सकी, वहीं आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उसे रचनात्मक कार्यों हेतु भी प्रेरित किया। अब जागरूक नारी समाज की अवहेलना करना आसान नहीं रहा। आज एक महिला घर में अकेले जितना कार्य करती है, उसका मोल कोई नहीं समझता। पुरूष इसे महिला की ड्यूटी मानकर निश्चिन्त हो जाता है। यह उस स्थिति में भी है जबकि महिला भी कमा रही होती है। आज जरूरत इस बात की भी है कि जी.डी.पी. में महिलाओं के कार्य की गणना हो और घरेलू कार्यों को हवा में न उड़ाया जाय। इस

अवधारणा को बदलने की जरूरत है कि बच्चों का लालन–पोषण और गृहस्थी चलाना सिर्फ नारी का काम है। यह एक पारस्परिक जिम्मेदारी है, जिसे पति–पत्नी दोनों को उठाना चाहिए। इस बदलाव का कारण महिलाओं में आई जागरूकता है, जिसके चलते महिलायें अपने को दोयम नहीं मानती और कैरियर के साथ–साथ पारिवारिक–सामाजिक परम्पराओं के क्षेत्र में भी बराबरी का हक चाहती है। एक तरफ लड़कियाँ हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाओं में बाजी मार रही है, वहीं तमाम प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ देश की सर्वाधिक प्रतिष्ठित सिविल सेवाओं में भी उनका नाम हर साल बखूबी जगमगा रहा है।

वर्तमान समय में महिलाएँ वैश्विक स्तर पर नाम रौशन कर रही है। नारी की शिक्षा–दीक्षा और व्यक्तित्व विकास के क्षितिज दिनों–ब–दिन खुलते जा रहे हैं जिससे तमाम नयें क्षेत्रों का विस्तार हो रहा है। कभी अरस्तू ने कहा कि "स्त्रियाँ कुछ निश्चित गुणों के अभाव के कारण स्त्रियाँ है।" तो संत थॉमस एम्बिनास ने स्त्रियों को पुरूष की संज्ञा दी थी, पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऐसे तमाम सतही सिद्धान्तों का कोई भी अर्थ नहीं रह गया एवं नारी अपनी जीवंतता के दम पर स्वयं को वियुद्ध चित्र के रूप में देख रही है। नारी आज न सिर्फ सशक्त हो रही है, बल्कि लोगों को भी सशक्त बना रही है। इस बात का अन्ततः स्वीकार करने की जरूरत है कि नारी को बढ़ावा देकर न सिर्फ नारी समृद्ध होगी बल्कि अन्ततः परिवार, समाज और राष्ट्र भी सशक्त और समृद्ध बनेगे। नारी उत्कर्ष आज सिर्फ एक जरूरत नहीं बल्कि विकास और प्रगति का अनिवार्य तत्व है।

वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम एवं योजनाओं का संचालन तो किया जा रहा है लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन निचले स्तर तक उचित ढंग से न पहुँच सकने के कारण स्त्रियों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा है। यह सत्य है कि वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आए है, लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरूष–प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है। इस सन्दर्भ में युगनायक एवं राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानन्द का यह कथन उल्लेखनीय है–"किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए, जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वये सुलझा सकें। हमें नारी शक्ति के उद्धारक नहीं, वरन् उनके सेवक और सहायक बनना चाहिए। भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किसी भी नारियों की भाँति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती है। आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ सन्निहित है।"

***सहायक व्याख्याता, राजनीति विज्ञान**
एस.एस.जैन सुबोध स्नातकोत्तर (स्वायत्तशासी) महाविद्यालय, जयपुर।

सन्दर्भ :–

1. राम आहुजा,**भारतीय सामाजिक व्यवस्था,** रावत प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. ए.एस.अल्तेकर, **द पोजीशन ऑफ विमेन इन हिन्दु सिविलाइजेशन,** मोती लाल बनारसी व्यास, वाराणसी.
3. बदीम हसनैन, **समकालीन भारतीय समाज,** भारत बुक सेन्टर, लखनऊ.
4. डॉ. राजकुमार, **नारी के बदलते आयाम,** अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
5. डॉ. प्रभा आम्टे, **भारतीय समाज में नारी,** क्लासिक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर.
6. डॉ. एम.एम. लवानिया, **भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र**, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर.
7. साधना आर्य, निवेदिता मेनन, जिनि लोकनीता,**नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे,** हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.
8. नीरा देसाई, **विमेन एण्ड सोसाइटी इन इण्डिया,** अजन्ता पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
9. नागेन्द्र शैलजा,**विमेन्स राइट्स,** ए.डी.वी. पब्लिशर्स, जयपुर.
10. कमलेश कुमार गुप्ता,**महिला सशक्तिकरण,**बुक एनक्लेव, जयपुर.
11. एम.एन.श्रीनिवास,**द चेन्जिग पोजीशन ऑफ इण्डियन वूमन,** ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटि प्रेस, बाम्बे.
12. जयप्रकाश व्यास,**नारी शोषण,** ज्ञानदा प्रकाशन.
13. डॉ. रजनीकान्त दास, **हिन्दू वूमन एण्ड हर फ्यूचर**, अर्जुन पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली.
14. प्रज्ञा शर्मा, **भारतीय समाज में नारी,** पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर.